मार्च-अप्रैल 2023

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगा

बाल पत्रिका

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 अनीसा

उड़ान

7 आसमान का नजारा / छोटी तितली

8 गर्मी

9 गरीब किसान

10 गोल-मटोल भालू

11 पूर्वी और प्रियल

12 लोकल धागा

ज्ञान विज्ञान

14 इन्द्रधनुष

जोड़-तोड़

15 तीली और त्रिभुज

कलाकारी

18 मेरा किचन गार्डन

बात लै चीत ले

19 दो बहनों का रिश्ता

20 अनपढ़ रहने की गलती

21 माथापच्ची/हीहीही-ठीठीठी

22 कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

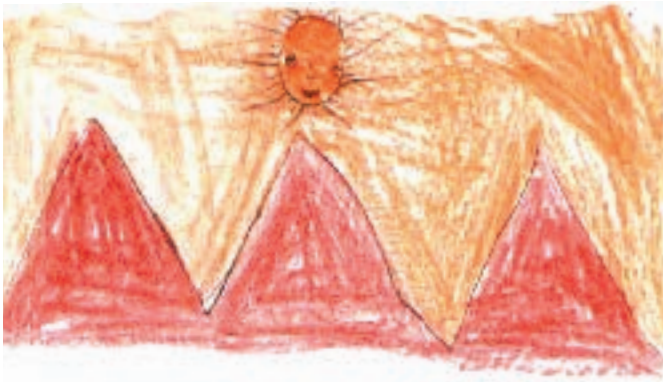

प्रतिज्ञा ढोली, कक्षा-5,
फेलोशिप सेंटर राँवल

सम्पादन : राजेश कुमावत
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : सुरेश चंद
वितरण : लोकेश राठौर
आवरण चित्र : **अमलेखा गुर्जर**, कक्षा-6, राज. उच्च प्राथमिक विद्यालय पालीघाट
वर्ष 14 अंक 153-154

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन-आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस-नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विष्णु गोपाल
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन: 07462-220957

परिचय

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर-सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम-1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव-जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला की सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन-सहन, खान-पान, आजीविका, संस्कृति, रीति-रिवाज, बोली-भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढ़ियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल

भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खौखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम - 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष-2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

नंदिनी, कक्षा-5, गांव शेरपुर

खेल खिलाड़ी

अनीसा

शिव के कानासर गाँव की बेटी के संघर्ष की कहानी -

स्कूल से लौटते ही बकरियाँ चराने जाती, शाम को दो घंटे लड़कों के साथ खेलती, नौ साल खेतों में अभ्यास करके क्रिकेटर बन गई अनीसा।

गाँव की सरकारी स्कूल में पढ़ाई के दौरान वर्ष 2013 में मेरे घर पर पहली बार टीवी आई। क्रिकेट मैच देखते हुए मन में ख्याल आया कि क्या मैं भी क्रिकेटर बन सकती हूँ। यह बात किसी को बताई नहीं और सात साल की उम्र में ही बच्चों के साथ खेलना शुरु किया। सुबह तीन किमी दूर कानासर गाँव की सरकारी स्कूल में पढ़ने के लिए जाती और वापस लौटकर बकरियाँ चराने चली जाती।

शाम को दो घंटे का समय आराम के लिए मिलता था। उस दौरान मैं बच्चों के साथ खेलने लग जाती थी। बच्चों के साथ मेरा खेलना रिश्तेदारों व आस-पड़ौस के लोगों को अच्छा नहीं लगता था। इसलिए मेरे पिताजी को कई बार लोगों ने उलाहना दिया कि आपकी बेटी गाँव के लड़कों के साथ क्यों खेल रही है। यह बात मुझे मन ही मन में तकलीफ दे रही थी लेकिन कुछ कहने की बजाय चुपचाप सुनती रही और खेलना जारी रखा।

क्रिकेट का जुनून ऐसा था कि खेलना मेरी आदत में शुमार हो गया। इस दौरान रोशन गाँ कोट ने मुझे मोटिवेट करते हुए कहा कि तेरे अंदर क्रिकेट का जुनून है और तुम अच्छी खिलाड़ी बन सकती हो। उस शख्स की प्रेरणा के बाद लगातार क्रिकेट का अभ्यास जारी रखा। परिवार व नजदीकी लोगों में किसी को मेरे पर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि ये लड़की कुछ कर पाएगी।

उस दिन से जिद्द शुरु की, कि क्रिकेट में भविष्य बनाकर इन लोगों को चुप करवाना है। फिर क्रिकेट के अभ्यास में पूरी ताकत झौंक दी। गाँव में न खेल का मैदान और न ही संसाधान थे। साथ में खेलने के लिए कोई बच्ची भी नहीं थी। इस स्थिति में लड़कों के साथ खेलने का सिलसिला जारी रखा। पाँच साल की मेहतन के बाद राजस्थान महिला क्रिकेट टीम 19 में चयन होना मेरे लिए किसी

सपने से कम नहीं है।

गाँव में रोजाना लड़कों के बीच मैं अकेली लड़की खेलती थी। यह बात हर किसी को अखर रही थी। क्योंकि गाँवों का माहौल शहरो के मुकाबले अलग है। बेटे व बेटी को लेकर सोच अलग थी। लोगों के तानों से तंग आकर एक बार क्रिकेट खेलना बंद कर दिया था। फिर सोचा कि इन लोगों की वजह से मेरी इतने साल की मेहनत पर पानी फिर जाएगा

फिर हिम्मत जुटाई और लोगों की बातो को अनसुना कर खेलना जारी रखा। बाड़मेर-जैसलमेर के ग्रामीण परिवेश में आज भी बेटियों को बेटों के मुकाबले पढ़ाई व खेलों में तवज्जों नहीं मिलती है। लेकिन बेटियाँ किसी से कम नहीं है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण मैं हूँ। जब मेरे जैसी सामान्य परिवार की लड़की विकट हालातों से जूझते हुए राजस्थान की महिला क्रिकेट टीम तक पहुँच सकती है तो दूसरी बेटियाँ क्यों नहीं। बस इसके लिए जुनून होना जरूरी है। मेहनत के साथ मैदान में डट जाए तो सफलता अवश्य मिलेगी।

स्त्रोत, इन्टरनेट से (अनीसा मेहर, खिलाड़ी, महिला क्रिकेट टीम-राजस्थान)

आसमान का नजारा

मैंने देखा एक नजारा
आसमान मे था वह न्यारा
रेल के डिब्बे थे अनेक
तारों के संग दिखते नेक
मैंने देखा, पापा ने देखा
और भैया ने भी देखा
लगता है उसको सबने देखा
रात को गई जब लाइट
पूर्व में थी वह सेटेलाइट

सपना बैरवा, कक्षा-8,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

छोटी तितली

रंग बिरंगी छोटी तितली
क्यों मुझसे तू डरती है
फल फूल पर जाकर तितली
क्यों बातें तू करती है
शहर है तुझको प्यारा
जिस पर तू मरती है
रोज थोड़ा-थोड़ा चुनकर
अपने घर को भरती है
रोज देखती हूँ मैं छत से
इधर-उधर मटकती है
कहीं छीन ना लूँ, मैं तेरा शहर
इसलिए तू मुझसे डरती है

रिया सोलंकी, उमंग-9 वर्ष,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

मीनाक्षी बैरवा, उम्र-13 वर्ष,
समूह-हरियाली

गर्मी

ज्योति सैनी, कक्षा-9, उमंग प्रोग्राम श्यामपुरा

गर्मी का मौसम आया
संग में अपने पतझड़ लाया
चारों तरफ धूप की माया
कहीं मिले ना पेड़ की छाया
तन बदन पर पसीना बह आया
हर कोई इससे घबराया
घर में कूल फ्रिज भी लाया
पर बिजली का बिल तगड़ा आया
सर पर बांध के निकले तगड़ी
हवा चले जब बाहर तकड़ी
होंठों पर छा जाये पपड़ी
काटकर खाए खीरा ककड़ी
सब का मन तब ललचाये
लाल तरबूज जब दिख जाये
ठंडे पर जब जी ललचाया
समझो गर्मी का मौसम आया।

रवीना शर्मा, कक्षा-6,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

तरुणा सिंह राजावत, कक्षा-6, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय पालीघाट

गरीब किसान

एक था गरीब किसान
उसके पास था बहुत अनाज
अनाज थे पीले
घर में लग गये किड़े
कीड़े थे काले
किसान ने सबको निकाले
राशन से मिल रही थी दालें
दालों में थी पपड़ी
किसान ने बनाई खिचड़ी
गिर गई उसमें मकड़ी
थोड़ा सा हुआ उदास
पर था वो बिंदास
किसान ने पिया पानी
इधर से आई नानी
नानी ने खिलाई पपीता
खत्म हुई कविता

विजय गुर्जर, कक्षा-7,
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

प्रिया गुर्जर,
कक्षा-6,
उदय सामुदायिक
पाठशाला
गिरिराजपुरा

गोल-मटोल भालू

एक भालू गोल मटोल
काम करता टालमटोल
बात करता बड़ी-बड़ी
लेकर हाथ में एक छड़ी
ज्ञान भरा है उसके अंदर
बातें सुनते उसकी बंदर
मगर देख ले जो वह शहद का छाता
भूल जाता है हर काम जो है आता

सपना राजावत
शिक्षिका, उदय सामुदायिक
पाठशाला कटार

पूर्वी और प्रियल

सुनीता मीना, कक्षा-7, फेलोशिप सेंटर बावड़ी

लम्बे समय की बात है। एक छोटे से गाँव में एक गरीब कुम्हार रहता था। उसका नाम रामू था। उसकी दो बेटियाँ थी। उनका नाम पूर्वी और प्रियल था। दोनों बेटियाँ पढ़ना चाहती थी इसलिए वे दोनों अपने पिताजी से बार-बार पढ़ने की जिद किया करती थी। स्कूल दूसरे गाँव में था और बीच में एक नदी भी पड़ती थी। उस गाँव में एक भी लड़की पढ़ी-लिखी नहीं थी। अपनी बेटियों की पढ़ने की इच्छा को देखकर रामू ने गोलगप्पे बेचना शुरु कर दिया और उसकी पत्नी मिट्टी के दीपक बनाकर बेचने लगी। रामू के पास गोलगप्पे बेचकर जो पैसे आते उसे वह बेटियों की पढ़ाई के लिए गुल्लक में जमा कर देता था और दीपक बेचकर जो पैसे आते थे उसमें उनका घर का गुजारा हो जाता था। अब पूर्वी और प्रियल 6-7 वर्ष की हो गई थी। रामू एक दिन दोनों बेटियों को नदी के पार स्कूल छोड़ने गया। वहाँ स्कूल शिक्षिका बोली कि मैं यहाँ पर बिना दाखिला नहीं पढ़ा सकती। रामू उनको वापस गाँव ले आया। उसकी पत्नी देखकर बोली क्या हो गया जी? रामू बोला कि बिना दाखिले के यह स्कूल नहीं जा सकती। मैं अभी सरपंच जी के पास जा रहा हूँ। वह सरपंच के घर जाकर बोला कि मुझे मेरी दोनों बेटियों के जन्म प्रमाण पत्र दे दो। सरपंच बोला कि इसकी तुम्हें क्या जरूरत पड़ गई। रामू बोला कि मुझे अपनी लड़कियों को पढ़ाना है। सरपंच बोला कि क्या तुम गाँव की नाक कटवाओगे? क्या तुम गाँव का नाम डुबाओगे? देखो यहाँ लड़कियों को कोई भी नहीं पढ़ाता है। रामू बोला मैं तो पढ़ाऊंगा। सरपंच आग बबूला हो गया और उसने गुस्से में आकर उसे जन्म प्रमाण पत्र दे दिया। रामू ने पूर्वी और प्रियल का स्कूल में दाखिला करवा दिया। अब दोनों बहने रोज स्कूल जाती थी तो उन्हें देखकर गाँव की दूसरी लड़कियाँ भी अपने माँ-बाप से स्कूल जाने की जिद्द करने लगी।

रवीना शर्मा, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

लोकल धागा

प्रिया गुर्जर, कक्षा-5,
फेलोशिप सेंटर खवा

एक बार एक गाँव था। उस गाँव का नाम सिंगापुर था। सिंगापुर में एक परिवार रहता था। उस परिवार में एक आदमी था। उस आदमी का नाम कालू था। कालू के पास एक सिलाई की मशीन थी जिससे वह अपना गुजारा चलाता था। कालू बहुत लालची था। एक दिन कालू अपनी दुकान पर गया था तभी उसकी दुकान पर एक ग्राहक आया। उस ग्राहक ने कहा कि मेरे पेंट को फिटिंग कर दो तो कालू ने पेंट में लोकल धागा लगाकर सिलाई कर दी और उसे दे दी। वह आदमी पेंट लेकर चला गया। ऐसे दिन बीतते गये कालू लोकल धागा लगाता गया। एक दिन वह आदमी चुपके से कालू की दुकान देख रहा था तब कालू लोकल धागा लगा रहा था। फिर क्या था उस आदमी को सारी कहानी समझ में आ गई। उसने सोचा कि इसको सबक सिखाना चाहिए। उसने सारे गाँव में उस बात को फैला दी कि कालू लोकल धागा लगाता है। धीरे-धीरे सभी गाँव वालों को उस दर्जी की असलियत पता चल गई। अब गाँव वालों ने उसकी दुकान पर जाना बंद कर दिया। ऐसे ही दिन बीतते गये। कालू दुकान पर ग्राहकों का इन्तजार करता रहता उसके पास कोई कपड़े सिलवाने नहीं जाता। ऐसे करते-करते कालू की दुकान बंद हो गई और कालू को अपनी गलती का अहसास हो गया और अब कालू ईमानदारी से काम करने लग गया। धीरे-धीरे उसकी दुकान पहले की तरह ही चलने लग गई।

विजय गुर्जर, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

अंकित टटवाल,
कक्षा-6, उदय सामुदायिक
पाठशाला गिरिराजपुरा

दिलीप मीना, कक्षा-4,
फेलोशिप सेंटर खवा

मेरा विज्ञान के प्रयोग करते समय शिक्षक न जाने कितने तरीके के अनुभव करता है। मैंने बच्चों के साथ कक्षा-कक्ष में विज्ञान शिक्षण के दौरान प्रकाश पर कार्य करते हुए जो अनुभव किया उसे आपके साथ साझा कर रहा हूँ। प्रकाश सात रंग से मिलकर बना होता है। इसके बारे में हम लोग प्रयोग कर रहे थे। बच्चों को सामान्य दर्पण दे दिया गया। जो करीब 15 सेंटीमीटर चौड़ा और 10 सेंटीमीटर लम्बा था। इसके साथ ही एक ट्रे दी गई जिसके अंदर बच्चों ने पानी भर लिया और दर्पण् को पानी भरी हुई ट्रे में रखकर सूरज की रोशनी की दिशा में रख दिया। इसके बाद बच्चे दर्पण से टकराकर जा रहे प्रकाश (चिलका) को दीवार पर देखने लगे। कुछ समय बाद कक्षा-कक्ष की एक दीवार पर इंद्रधनुष बनता नजर आया।

बच्चे स्पष्ट रुप से देख पाए कि प्रकाश सात रंग (बेंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी, जामुनी) से बना होता है।

प्रयोग करने के बाद जब बच्चों से चर्चा की जा रही थी तो बच्चों के मन में यह भी एक सवाल था कि दीवार पर जो इन्द्रधनुष बना है। वह एक आयताकार आकृति के रूप में है लेकिन उन्हें तो प्रकाश की प्रत्येक किरण और उसके रंग को देखना था।

बच्चे वास्तविक रूप से कैसे देख पाए?

जब हम सभी आपस में चर्चा कर रहे थे तो वर्षाना की निगाहे अचानक से मोबाईल की स्क्रीन पर दिखाई दे रही रंग बिरंगी किरणों पर पड़ी जो कि सात रंगों की थी। उसने सबको बुलाकर कहा कि देखो हम जो प्रयोग दीवार पर करके देख रहे थे वह मोबाईल की स्क्रिन में स्पष्ट रूप से नजर आ रही है। इसप्रकार से बारी-बारी से सभी बच्चों ने स्क्रिन को देखकर समझ बनाई कि जो सूरज से किरणे निकल रही हैं वह सात रंग से बनी हुई होती हैं।

तरुण कुमार शर्मा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

जोड़ - तोड़

तीली और त्रिभुज

शुरु बात 5 फरवरी, 2021 की उमंग कार्यक्रम श्यामपुरा की है। उस दिन मेरी योजना विज्ञान विषय की थी। जब मैं कक्षा में गया और बच्चों से बात की और कहा कि आज हम विज्ञान पढ़ेंगे तो ज्योति रेवारी ने कहा सर हम आज भी विज्ञान नहीं गणित पढ़ेंगे साथ ही रेवंता, राममूर्ति, कल्लो, रचना, निरमा, विकासी भी कहने लगी कि सर आज हमारा गणित पढ़ने का मन है तो यह सुनकर मेरा दिमाग खराब हो गया। क्योंकि मेरी विज्ञान विषय की प्लानिंग तो धरी रह गई। फिर भी मैंने सोचा बच्चों की बिना इच्छा के पढ़ाऊंगा तो उसमें उनका मन नहीं लगेगा और मेरी मेहनत भी व्यर्थ जाएगी तो मैंने फिर हिम्मत करके बालिकाओं से पूछा कि आज आपको गणित क्यों पढ़नी है तो तीन-चार बालिकाओं ने बताया कि सर आज हमारा मन गणित पढ़ने का कर रहा है। फिर मैंने पूछा क्या पढ़ना चाहोगे तो उन्होंने कहा बहुभुज आकृतियों वाली प्रश्नावली पढेंगे तो मैंने कहा आप बहुभुज आकृतियों को ही क्यों पढ़ना चाहते हैं तो विकासी ने कहा सर हमारे स्कूल में भी यही प्रश्नावली चल रही है और कल इसमें से ही प्रश्न भी पूछेंगे फिर मैंने कहा तब तो मुझे आपको गणित पढ़ानी पड़ेगी। तब मैंने सोचा कि शिक्षण को रोचक बनाने के लिए कुछ गतिविधि तो करवानी पड़ेगी और टीएलएम के रूप में माचिस की तीली चाहिए थी वह भी नहीं थी तो मैंने उसका अल्टरनेट निकाला की पंचायत के सामने मंजू का घर है तो मैंने कहा मंजू तुम्हारे घर बांस की तीली वाला झाड़ू है तो मंजू ने कहा, हाँ सर है। मैंने कहा, मंजू जल्दी घर जाकर तीलियों का झाड़ू लेकर आओ। मंजू घर गई और झाड़ू लेकर आ रही थी तो उसकी मम्मी ने कहा झाड़ू का क्या करेगी। मंजू ने कहा गुरूजी पढ़ायेंगे। मंजू की मम्मी ने कहा झाड़ू से ऐसी कैसी पढ़ाई होती है। मैं भी तो देखूं तो उसकी मम्मी भी आ गई और गेट के पास आगर खड़ी-खड़ी देख रही थी।

मैंने बालिकाओं से झाड़ू की तिलियों को बराबर-बराबर 5 सेंटीमीटर लंबी तुड़वा ली और मैंने कुछ साइकिल रबर वाल्व के टुकड़े भी दे दिये और कहा कि इन तीलियों को वह रबर वाल्व की मदद से त्रिभुज बनाने का प्रयास कीजिए।

मैंने बालिकाओं से प्रश्न किया कि क्या हम निम्न तीलियों से त्रिभुज बना सकते हैं? जैसे- 3 तीलियों से, 4 तीलियों से, 5 तीलियों से।

नोट - आपको ध्यान रखना है कि आपको प्रत्येक स्थिति में सभी उपलब्ध तीलियों का उपयोग करना है।

तीलियों को जमाने की विभिन्न स्थिति में त्रिभुज के प्रकार का नाम बताइये यदि आप त्रिभुज नहीं बना पाते हैं तो उसके कारण के बारे में भी सोचिए।

मैंने उन्हें बताया कि त्रिभुज बनाने के लिए कम से कम 3 तीलियों की जरूरत होती है।

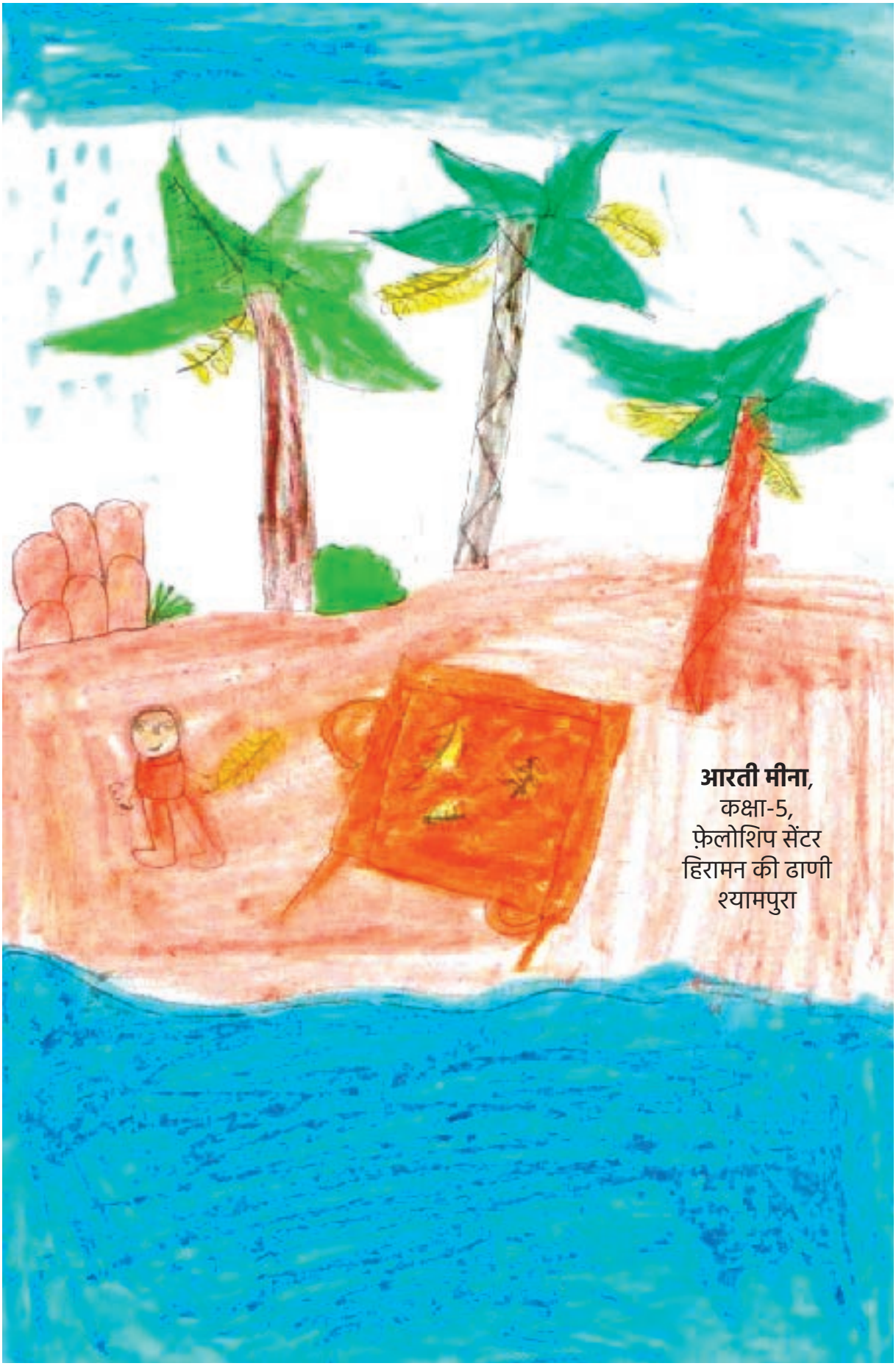

आरती मीना,
कक्षा-5,
फ़ेलोशिप सेंटर
हिरामन की ढाणी
श्यामपुरा

जैसे - 3 तीलियों से बनने वाले त्रिभुज -

4 तीलियों से बनने वाले त्रिभुज -

5 तीलियों से बनने वाले त्रिभुज - (समद्विबाहु त्रिभुज)

6 तीलियों से बनने वाले त्रिभुज - (समबाहु त्रिभुज)

बालिकाओं से 6 तीलियों से भिन्न-भिन्न प्रकार की आकृतियाँ बनाने का अभ्यास कार्य करवाया जिसमें सभी बालिकाओं ने विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ बनाई। फिर बालिकाओं से प्रश्न पूछा गया कि आकृति बंद है या खुली, इस आकृति में कितनी भुजायें हैं।

फिर मैंने एक और प्रश्न किया कि क्या तुम किसी तरीके से यह बता सकते हो कि ये आकृतियाँ एक दूसरे से कैसे अलग हैं?

बालिकाओं को सोचने के लिए प्रेरित किया गया तथा बताया गया कि किस तरह अलग हैं। समान संख्या में ली गई तीलियों से बनने वाली आकृतियाँ भी अलग हो सकती हैं। इससे उन्हें यह महसूस हुआ कि किस तरह कौन-कौनसी बहुभुज आकृति निर्धारित करते हैं। इस प्रकार बालिकाओं ने तीलियों व रबड़ वाल्व की सहायता से विभिन्न प्रकार के बहुभुज बनाकर समझ बनाई। इस कार्य को देखकर मंजू की मम्मी भी खुश हो गई और कहा कि सरकारी स्कूल मैं तो अस्यां कोनी पढ़ावे गुरूजी और उन्होंने बालिकाओं से नियमित आने के लिए भी बोला।

भोला शंकर रैगर, उमंग कार्यक्रम सेंटर-श्यामपुरा।

गोलमा गुर्जर, कक्षा-8,
उदय सामुदायिक पाठशाला
गिरिराजपुरा

मेरा कीचन गार्डन

मैंने स्कूल के कीचन गार्डन में देखा कि इतनी सी जगह पर धनियाँ, पालक, बैंगन, लहसुन उग रहे हैं तो क्यों ना मैं भी हमारे बाड़े में कुछ उगा लूं। फिर मैं बाड़े में गई और कुदाली से बाड़े की जमीन को अच्छी तरह से खोद दिया। खुदी हुई जमीन में थोड़ा सा मेंगनी का खाद भी डाल दिया। उसमें थोड़ा-थोड़ा पानी डालकर भिगो दिया। फिर उसमें लहसुन की पोथियों की कलियों को अलग-अलग करके लगा दिया तथा थोड़ा सा मोटा धनिया लिया उसे बेलन से हल्के हाथ से बांटकर जब धनिये के प्रत्येक बीज के दो अलग-अलग भाग हो गये तब उन्हें मिट्टी में डार कर अंगुलियों से थोड़ी मिट्टी उनके ऊपर डाल दी। इस तरह मैंने बाड़ें में लहसुन और धनिया बो दिया। हमारे बाड़े के चद्दरों के ऊपर से नरेश के घर का पानी का पाईप जा रहा था। वह पाईप एक जगह से लीकेज था तो उस पाईप से पानी चद्दरों पर होते हुए मेरे बाड़े में गिर रहा था। मैंने सोचा कि यदि इसमें मुझे और पानी नहीं डालना चाहिए क्योंकि पहले ही चद्दर के लीकेज पाईप से पानी गिर रहा है यदि ज्यादा पानी डाला तो यह लहसुन और धनिया गल जायेगा। फिर मैंने चार-पांच दिनों तक उसमें पानी नहीं डाला क्योंकि नरेश के घर की मोटर रोजना चलती थी तो उस लीकेज पाईप से पानी आ जाता था। हमारे बाड़े के टांटी (गेट) नहीं था जिसके कारण एक दिन बाड़े में कुत्ता घुस गया और वह धनिया की क्यारी में जाकर बैठ गया उसने सारे धनिये को कूरद दिया। जब मैंने बाड़े में जाकर देखा तो उस कुत्ते ने पूरा धनिया खराब कर दिया था हाँ लहसुन जरूर बच गया था। फिर मैंने वहाँ लहसुन की क्यारी में एक नाली बना दी जिससे की पाईल का आ रहा पानी बाहर निकल जाये, नहीं तो ज्यादा पानी की वजह से लहसुन गल जायेगा। फिर हमने बाड़े के गेट पर कांटे लगा दिये जिससे की कुत्ता या कोई जानवर बाड़े में नहीं घुस सके। यदि मुझे पहले ही पता होता कि कुत्ता या अन्य जानवर धनिया को खराब कर देंगे तो मैं पहले ही कांटे लगा देती।

मीनाक्षी बैरवा, कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

मुस्कान मीना, कक्षा-5, फेलोशिप सेंटर हिरामन की ढाणी

दो बहनों का रिश्ता

एक एक गाँव था। उस गाँव में एक घर में सुवालाल नाम का एक आदमी रहता था। उस आदमी की दो जुड़वाँ बेटियाँ थी। बड़ी बेटी का नाम नवीरा था। वह सूरत से गोरी थी। नवीरा अपने गोरे रंग पर बहुत घमंड किया करती थी और वह पढ़ने में बहुत ही कमजोर थी। दूसरी बेटी का रंग सांवला था इसलिए उसका नाम सांवली ही रख दिया। अब दोनों बहने एक ही कक्षा में पढ़ने जाती थी किन्तु नवीरा, सांवली को अपने पास नहीं बैठाती थी। एक दिन नवीरा, सांवली से बोली कि तुम अपने कमरे में ही रहना आज मेरे कुछ दोस्त आने वाले हैं। सांवली मान गई और बोली ठीक है। थोड़ी ही देर में दरवाजे की घंटी बजी तो नवीरा दौड़ती हुई अपने दोस्तों के लिए दरवाजा खोलने गई। उसके सभी दोस्त घर के अंदर आ गए और उन्हें कुर्सियों पर बैठा दिया। नवीरा बोली मैं आपके लिए चाय बनाकर लाती हूँ तुम सभी यहीं पर रहना यह कहती हुई सावली के पास गई और कहने लगी अगर मै चाय बनाऊंगी तो मैं थक जाउंगी। मेरे दोस्त आये हैं तो उनसे बातचीत करना भी जरूरी है। इसलिए तुम केवल चाय बना दो। चाय लेने मैं खुद आ जाउंगी। सांवली ने रसोई में जाकर चाय बना दी और नवीरा को खूब आवाज लगाई पर नवीरा तो अपने दोस्तों के पास बैठी बात कर रही थी। नवीरा सुन नहीं पाई और सांवली को ही चाय देने आना पड़ा। नवीरा के दोस्त सांवली को देखकर हैरान हो गये और नवीरा से बोले कि तुमने हमसे क्या कहा कि मेरे कमरे में तो एक नौकरानी है। यह तो सांवली है जो तुम्हारे साथ ही पढ़ती है। यह सुनकर नवीरा ने अपना सिर खुजा लिया। उसके दोस्त वहाँ से चले गये और बोले आज से हम तुम्हारे दोस्त नहीं है।

शीतल बैरवा, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

अनपढ़ रहने की गलती

एक एक लखन नाम का लड़का था। वह पढ़ा लिखा नहीं था। वह एक दिन पैसे कमाने के लिए जयपुर जा रहा था। वह सवाई माधोपुर से ट्रेन पकड़कर जयपुर जाने लगा लेकिन क्या हुआ वह पढ़ा लिखा नहीं था इस कारण से जयपुर की जगह जोधपुर की रेलगाड़ी में बैठ गया। थोड़ी देर बाद रेल का टीटी आया और लखन से बोला कि टिकिट दिखाओ पर उसने तो टिकिट ही नहीं कटवाया था। उसने तो रेल को भी बस की तरह ही सोच था कि कंडेक्टर आयेगा तो उसको पैसे दे देंगे। टीटी ने उस पर आठ सौ रूपये का जुर्माना लगा दिया और कहने लगा कि या तो जुर्माना दे, नहीं तो तुझे जेल जाना पड़ेगा। यह सुनकर लखन डर गया उसने टीटी को आठ सौ रूपये दे दिये। लखन घर से एक हजार रूपये लेकर ही चला था। टीटी ने लखन से पूछा कि बता तुझे कहाँ जाना है। वह बोला कि मुझे जयपुर जाना है। यह सुनकर टीटी ने कहा कि तू पागल है क्या? जयपुर तो कब का निकल गया। अब तो जोधपुर आने वाला है। अब तुम ऐसा करना जोधपुर से जयपुर वाली ट्रेन में बैठकर जयपुर चले आना। लखन डरते-डरते जयपुर पहुँच ही गया। अब लखन जगह-जगह काम ढूंढने लगा किन्तु जहाँ भी वह काम करने की तलाश करता वहाँ उसकी पढ़ाई के बारे मे जरूर पूछते इस वजह से उसे कोई भी अच्छा काम नहीं मिल रहा था। अब तो उसके पास पैसे भी खत्म हो गये थे। आखिरकार एक ढाबे पर साफ-सफाई व बर्तन धोने का काम मिल गया। खाना तो अब ढाबे पर ही खा लेता और रात दिन वहीं रहता था। काम करते करते वह बहुत थक भी गया था। पूरे तीन महीने बाद दस हजार रूपये लेकर अपने गाँव आ गया और गाँव की बकरियो को चराने लगा। थोड़े दिनों के बाद उसने चार-पाँच बकरियाँ खरीद ली और अब उन्हें ही चराने लगा।

अजय नायक, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

वर्षाना बैरवा, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

रोहित नायक, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

माथा पच्ची

1 ऐसी कौनसी चीज है जो खुद नहीं देखती लेकिन दूसरों को रास्ता दिखाती है?

2 ऐसी कौनसी चीज है जिसकी खुद की परछाई नहीं होती?

3 ऐसी कौनसी चीज है जो गर्म होने पर जम जाती है ?

4 जितना ज्यादा चलता जाता, उतना घटता जाता है। सभी रंग का होता है, पानी के संग चलता है?

5 काले वन की रानी है लाल पानी पीती है?

बलवीर गुर्जर, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

हीहीही-ठीठीठी

अध्यापक - सुमित, लाल किला कहाँ है?
सुमित - पता नहीं।
अध्यापक - टेबल पर खड़ा हो जा।
(सुमित टेबल पर खड़ा होने के बाद इधर-उधर देखता है)
सुमित - सर, यहाँ से भी लाल किला दिखाई नहीं दे रहा है।

मोटू - पापा, मुझे बाजा दिला दो।
पापा - नहीं तुम सबको तंग करोगे।
मोटू - नहीं करूंगा पापा, जब सब सौ जायेंगे तब बजाऊंगा।सका।

रामभजन योगी, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

रामकृष्ण मीना, कक्षा-5,
फेलोशिप सेंटर हिरामन की ढाणी

रंगों की जुबानी

सुनो उसकी कहानी....

भारती माली
कक्षा-5, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार
के द्वारा शुरू की गई कविता को
पूरा करो और **मोरंगे** को भेजो।

रोहित मीना,
कक्षा-5,
फेलोशिप सेंटर खाण्डोज

एक गाँव था। उसमें एक आदमी के दो पुत्र थे। एक पुत्र आलसी था और एक पुत्र मेहनती था। मेहनती पुत्र मेहनत कर धन कमाके घर का गुजारा चलाता था और आलसी पुत्र सोता ही रहता था। कुछ समय के बाद उनका पिता परेशान होकर दोनों का बंटवारा कर उन्हें अलग कर देता है। मेहनती पुत्र तो कमाकर अपने घर का गुजारा चला लेता है परन्तु आलसी पुत्र की हालत खराब हो जाती है। ....

चेतराम गुर्जर, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा के द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करो और **मोरंगे** को भेजो।

शीतल बैरवा, कक्षा-4, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

पहेलियों के ज़वाब -

1. लाठी 2. सड़क 3. अण्डा 4. साबुन 5. जूँ

प्रिया मीणा, कक्षा-2,
फ़ेलोशिप सेंटर खाण्डोज